INDIAN SCHOOL AL WADI AL KABIR

Class: IX	Department: Hindi	Date of submission: NA
Question Bank: 12	Topic: अग्नि पथ	Note: Pl. file in portfolio

कविता - अग्नि पथ : डॉ. हरिवंश राय बच्चन (1907 - 2003)

प्रश्न – {1} कवि ने 'अग्नि पथ' किसके प्रतीक स्वरुप प्रयोग किया है ?

उत्तर : अग्नि पथ से कवि का तात्पर्य है आग से घिरा या कठिनाइयों से भरा रास्ता । उन्होंने अग्नि पथ को संघर्षरत मनुष्य के जीवन के प्रतीक स्वरुप चित्रित किया है । इस प्रतीक के द्वारा कवि यह समझाना चाहता है कि जीवन के हर कदम पर संघर्ष करना पड़ता है । कर्मरत मनुष्य सारी कठिनाइयों को झेलकर उनका डटकर सामना करके विजयी होता है ।

प्रश्न – {2} 'माँग मत', 'कर शपथ', 'लथपथ' इन शब्दों का बार-बार प्रयोग कर कवि क्या कहना चाहता है ?

उत्तर : कविता में जिन शब्दों या वाक्यों का बार-बार प्रयोग किया जाता है, वे अत्यंत महत्त्पूर्ण होते हैं। इस कविता में भी कवि ने इन शब्दों द्वारा ऐसा ही काम लिया है। वे बताना चाहते हैं कि संघर्ष करने वाले मनुष्य को सुख-सुविधाओं की भिक्षा नहीं माँगनी चाहिए। सुविधाएँ मनुष्य को संघर्ष से भटका देती हैं। इसके लिए कवि संघर्षरत मनुष्य से बार-बार शपथ लेने की बात करता है और रक्त से लथपथ मनुष्य के चित्र द्वारा वह मनुष्य की संघर्षशक्ति की ओर इशारा करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि इन शब्दों के बार-बार प्रयोग से काव्य सौन्दर्य बढ़ जाता है।

प्रश्न : {3} 'एक पत्र छाँह भी माँग मत' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर : कवि कर्मठ मनुष्य से एक साधारण सुविधा भी नहीं माँगने का आहवान करता है क्योंकि छोटे सुखों की चाहत भी संघर्ष से भटका देती है । मनुष्य, संघर्ष करके सुविधाजीवी हो जाता है । जिससे वह अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच पाता ।

प्रश्न – {4} निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) तू न थमेगा कभी ! तू न मुड़ेगा कभी !

उत्तर : इन पंक्तियों का भाव यह है कि उसे कष्टों से डरकर रुकना नहीं चाहिए और न पीछे मुड़ना चाहिए । कठिन मार्ग पर उसे निरंतर संघर्ष करते हुए मंजिल की ओर आगे बढ़ते रहना चाहिए ।

(ख) चल रहा मनुष्य है, अश्रु - श्वेद - रक्त से लथपथ, लथपथ, लथपथ !

उत्तर : कवि के अनुसार मनुष्य को सफल और सार्थक जीवन जीने के लिए आगे बढ़ते रहना चाहिए । यह एक कठिन रास्ता है जिस पर चलते हुए असहनीय पीड़ा होने पर आँसू बहते हैं । लगातार मेहनत से पसीना बहता है और घायल होने पर मनुष्य खून से लथपथ हो जाता है । फिर भी मनुष्य को लगातार आगे बढ़ते रहना चाहिए । ऐसा संघर्षरत मनुष्य ही जीवन में सफल होता है और उसे महान् कहा जाता है ।

प्रश्न - {5} इस कविता का मूल भाव क्या है ? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर : इस कविता का मूल भाव यह है कि जीवन निरंतर संघर्षों से भरा अग्नि पथ है, जिस पर मनुष्य को बिना किसी सहारे के और कष्टों से घबराए बिना आगे बढ़ते रहना चाहिए । इस यात्रा में आँसू, पसीने और खून से लथपथ होने के बावजूद भी वह आगे बढ़ते रहेगा तभी उसका जीवन सफल व सार्थक होगा ।

प्रश्न - {6} कवि ने अग्नि पथ के माध्यम से क्या संदेश दिया है ?

उत्तर : कवि ने कविता के माध्यम से यह संदेश दिया है कि रास्ते में सुख रूपी छाँह की इच्छा न करके अपने लक्ष्य की ओर संघर्ष करते हुए कर्मठतापूर्वक बिना थके निरंतर बढ़ते जाना चाहिए ।

प्रश्न - {7} अश्रु - श्वेद - रक्त से लथपथ पंक्ति क्या प्रदर्शित करती है ?

उत्तर : कविता 'अग्नि पथ' में अश्रु अर्थात् आँसू, स्वेद अर्थात् पसीना तथा रक्त अर्थात् खून से लथपथ लोगों की पंक्ति संघर्षरत मनुष्य की कर्म निष्ठा को प्रदर्शित करती है । आँसू, पसीना तथा रक्त क्रमश: पीड़ा, कर्मठता तथा साहस के द्योतक हैं ।

************** 4//11/2024 **Prepared** by: सुशील शर्मा *****************